17 अक्टूबर 2022, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य :2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2021-23

जैन पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

वर्ष : 45, अंक : 14
अक्टूबर (द्वितीय), 2022 (वीर नि. संवत्-2548)

संस्थापक सम्पादक : अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंद भारिल्ल
सम्पादक : डॉ. संजीवकुमार गोधा
सह-सम्पादक : पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल

आजीवन शुल्क : 251 रुपये
वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के प्रवचन
अरिहन्त चैनल पर
प्रात: 6:08 से 6:38 तक
Ptst Youtube पर
पुन: प्रसारण 2.30 से 3.00 तक
प्रात: 9 से 10 तक प्रवचनसार पर

पण्डित टोडरमल स्मारक भवन की वसुंधरा पर अध्यात्म मेला....

25वाँ आध्यात्मिक शिक्षण शिविर सानन्द सम्पन्न

जयपुर : यहाँ पण्डित टोडरमल सर्वोदय ट्रस्ट के तत्त्वावधान में ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन में दिनांक 02 से 09 अक्टूबर 2022 तक जिनागम के 25 महत्त्वपूर्ण विषयों का व्यवस्थित अध्ययन कराने वाला 25वाँ आध्यात्मिक शिक्षण शिविर पूजन, जिनेन्द्रभक्ति, प्रवचन, कक्षादि अनेक मांगलिक आयोजनों सहित सम्पन्न हुआ।

इस आयोजन में श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय जयपुर के 175, आचार्य अकलंक महाविद्यालय बाँसवाड़ा के 25, आचार्य धरसेन महाविद्यालय कोटा के 48 - इसप्रकार 248 विद्यार्थियों सहित अनेक साधर्मियों ने जैनदर्शन के आध्यात्मिक व सैद्धान्तिक विषयों का गहराई से अध्ययन किया।

उद्घाटन समारोह

02 अक्टूबर 2022 को प्रातः आयोजित उद्घाटन समारोह में ध्वजारोहण श्री निहालचन्दजी घेवरचन्दजी ओसवाल परिवार जयपुर, मण्डप उद्घाटन डॉ. जिनेन्द्रजी शास्त्री उदयपुर, मंच उद्घाटन श्री प्रदीपजी रपरिया कोलकाता एवं शिविर उद्घाटन श्री प्रेमचन्दजी बजाज परिवार कोटा के करकमलों से किया गया। इसी समारोह में श्री ताराचन्दजी सौगानी जयपुर ने कुन्दकुन्द आचार्य, श्री अखिलजी-चारूजी-आर्यन जैन जयपुर ने धरसेन आचार्य, श्री तन्मयजी-ध्याताजी परिवार बजाज कोटा ने आचार्यकल्प पण्डितप्रवर टोडरमलजी, श्री शान्तिलालजी चौधरी भीलवाड़ा ने आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के चित्र का अनावरण किया। शिविर के मुख्य आमंत्रणकर्त्ता श्रीमती शशि-सुरेशचन्दजी जैन शिवपुरी व आमंत्रणकर्त्ता श्री गुमानमलजी, आलोकजी-प्रतिमाजी, अरविन्द-सरिताजी टोंग्या परिवार जयपुर रहे।

उद्घाटन समारोह अन्तर्राष्ट्रीय विद्वान डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल जयपुर के मंगल सान्निध्य में सम्पन्न हुआ, जिसकी अध्यक्षता श्रीमान प्रेमचन्दजी बजाज कोटा ने की।

(शेष पृष्ठ 4 पर...)

भरत के अन्तर्द्वन्द्व के पश्चात् एक और प्रस्तुति...

वैराग्य है, वैराग्य है, ये नेमी का वैराग्य है

22वें तीर्थंकर नेमिनाथ भगवान के जीवन पर आधारित वैराग्य नाटक का मंचन ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन में सम्पन्न हुए 25वें आध्यात्मिक शिक्षण शिविर के मध्य दिनांक 04 अक्टूबर 2022 को किया गया।

तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल द्वारा लिखे गए वैराग्य महाकाव्य का ही जीवन्तरूप इस वैराग्य नामक नाटक में प्रस्तुत किया गया, जिसका नाट्यरूप लेखन श्रीमती अध्यात्मप्रभाजी जैन मुम्बई ने किया। डॉ. भारिल्ल की विशेषता है कि वह प्रत्येक घटना को एक अलग ही दृष्टिकोण से देखा करते हैं। इस वैराग्य की घटना को भी उन्होंने अपने काव्यकौशल से मात्र मनोरंजन का विषय न बना कर तत्त्वज्ञान से सराबोर कर दिया।

नाटक वैराग्य राग से वैराग्य की ओर ले जाने वाला तथा भव का अन्त करने वाला सिद्ध हुआ।

रागी से वैरागी होना यह तो कोई अपराध नहीं।
यह राग भाव को तोड़ो राजुल! भव की चर्चा का अंत करो,
और अधिक कहूं क्या हे राजुल! इस भव में भव का अंत करो।

नाटक की यह कुछ पक्तियाँ दर्शकों के हृदय में उतर गईं। नाटक के अंत में प्रसन्नचित्त होकर डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल ने कहा कि इस वैराग्य नाटक के माध्यम से हम समाज को जो संदेश देना चाहते थे वह बहुत अच्छी तरीके से उन तक पहुँचा है।

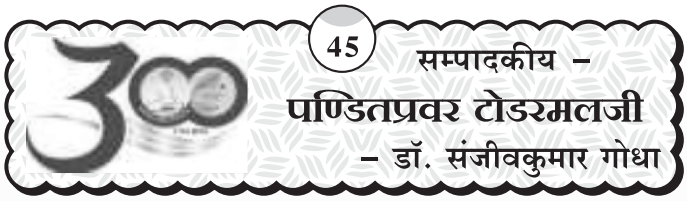

सातवें अध्याय का सार (जैन मिथ्यादृष्टियों का विवेचन)

सम्यक्त्व सन्मुख मिथ्यादृष्टि....

चार प्रकार के मिथ्यादृष्टियों के विवेचन के अन्तर्गत अब अन्तिम सम्यक्त्व सन्मुख मिथ्यादृष्टि की चर्चा प्रारम्भ करते हैं। जो जीव सम्यक्त्व के सन्मुख हैं अर्थात् सम्यक्त्व प्राप्ति की ओर बढ़ रहे हैं; लेकिन अभी मिथ्यादृष्टि हैं, उनका यहाँ निरूपण किया गया है।

कोई मन्द कषायादि का कारण मिला और ज्ञानावरणादि का क्षयोपशम हो गया, जिससे तत्त्वविचार करने की शक्ति हो गई तथा मोह मन्द होने से तत्त्वविचार के लिए प्रयत्नशील हो गया – इन दोनों में तो हमने कुछ किया ही नहीं। फिर परिस्थिति ऐसी हुई कि पुण्य का उदय अधिक होने से बाह्य में देव–शास्त्र–गुरु आदि सच्चे उपदेश के निमित्त भी मिल गए। इतना काम तो कषाय की मन्दता और पुण्य के उदय की तीव्रता से बिना कुछ किए ही हो गया।

अब करने योग्य क्या है? यह बताते हैं – यहाँ जो प्रयोजनभूत मोक्षमार्ग का, जीवादिक तत्त्वों का, निज–पर का, हितकारी–अहितकारी भावों का उपदेश मिला, उसमें ऐसा विचार करना कि **अहो! मुझे तो इन बातों की खबर ही नहीं थी। मैं तो भ्रम से भूलकर प्राप्त पर्याय में ही तन्मय हो गया; परन्तु इस पर्याय की स्थिति तो थोड़े काल की है।** हम अपने आपको बड़ा समझते हैं, मुझे इतने लोग जानते हैं, मैंने इतने शास्त्रों का अध्ययन किया। अरे भाई! इस पर्याय में क्यों तन्मय होते हो? जरा विचार तो करो इस पर्याय की स्थिति थोड़े ही काल की है। इस पर्याय में हमें सर्व निमित्त मिले हैं, सुनने–समझने के सुयोग्य अवसर मिले हैं, इसलिए इन्हें समझना चाहिए; क्योंकि इनमें तो अपना ही हित भासित होता है। जिसे ऐसा विचार आता है वही सम्यक्त्व का पात्र है, सम्यक्त्व के सन्मुख है। यदि किसी को ऐसे भाव आते हों कि बहुत सुन लीं शास्त्रों की बातें, वे सम्यक्त्व के पात्र ही नहीं हैं। यह अपने अन्दर में झाँककर विचार करने योग्य बात है कि जिनवाणी की बात सुनते हुए हमें कैसे भाव आते हैं?

अब शास्त्रों को समझने के अर्थ उसकी विधि बताते हैं कि पहले तो उद्देश्य, लक्षण–निर्देश और परीक्षा द्वारा निर्धार करना। उद्देश्य अर्थात् नाम सीखना। लक्षण–निर्देश अर्थात् स्वरूप को समझना। परीक्षा अर्थात् ऐसा संभव है या नहीं – इसप्रकार विचार करने से सच्चा निर्णय होता है। यहाँ नाम सीख लेना और लक्षण जान लेना – ये दोनों तो उपदेश के अनुसार होते हैं; लेकिन परीक्षा करने के लिए स्वयं का विवेक चाहिए।

यहाँ कोई कहे कि हम तो भगवान के उपदेश को बिना शंका किए स्वीकार करते हैं, उसमें परीक्षा की आवश्यकता ही क्या है? पण्डितजी उनसे कहते हैं कि परीक्षा किए बिना सही भावभासन नहीं हो सकता। भावभासन हुए बिना निर्मल श्रद्धान नहीं हो सकता। जैसे – किसी को हजार बार यह बता दिया जाए या रटा दिया जाए कि अग्नि गर्म होती है; लेकिन इतना सुनने/रटने के बावजूद भी जिसने अग्नि को कभी छूआ ही न हो, उसे अग्नि के गर्म होने का सही भावभासन नहीं हो सकता। टोडरमलजी ने तत्त्वनिर्णय के लिए भावभासन पर बहुत बल दिया है।

अब वह कहता है कि लोक में पुरुष की प्रामाणिकता से वचन की प्रामाणिकता होती है? उससे पण्डितजी कहते हैं कि भाई पुरुष की प्रामाणिकता भी तो पूर्व में उसके वचनों द्वारा ही की थी। जैसे – किसी व्यक्ति पर विश्वास तभी किया जाता है। जब पहले वह अपने विश्वास पर खरा उतरा हो। व्यक्ति की प्रामाणिकता भी पूर्व में कहे गए उसके सत्य वचन द्वारा ही धीरे–धीरे बनती है।

यहाँ कोई कहे कि शास्त्रों में तो अनेक प्रकार का उपदेश है, किस–किस की परीक्षा करें? उससे कहते हैं कि शास्त्रों में हेय–ज्ञेय–उपादेय तत्त्वों की चर्चा है। वहाँ मात्र हेय–उपादेय तत्त्वों की ही परीक्षा करना; क्योंकि यदि उपादेय को हेय अथवा हेय को उपादेय मान लिया जाए तो बुरा ही होगा। तथा अन्य जितने भी ज्ञेयतत्त्व हैं, उनकी परीक्षा करने की आवश्यकता नहीं है; क्योंकि जो प्रयोजनभूत कार्य में झूठ नहीं बोलता वह अप्रयोजनभूत कार्य में झूठ क्यों बोलेगा; इसलिए जिसके प्रयोजनभूत वचन प्रामाणिक हों उनके अप्रयोजनभूत वचनों को भी प्रामाणिक जानना।

जिसकी परीक्षा कर रहे हैं, उसकी अन्यथा परीक्षा न हो जाए इस भय से जिनवचन और अपनी परीक्षा को तर्क–युक्ति व न्याय से मिलाते रहना और तब–तक मिलाते रहना जब–तक अपनी परीक्षा जिनवचनों से न मिल गए।

जीवादिक तत्त्वों तथा स्व–पर को पहिचानना, त्यागने योग्य मिथ्यात्व–रागादिक और ग्रहण करने योग्य सम्यग्दर्शन आदि का स्वरूप जानना, निमित्त–नैमित्तिक आदि जैसे हैं वैसे पहिचानना – इत्यादि जिनके जानने से मोक्षमार्ग में प्रवृत्ति होती है, उन्हें अवश्य जानना और उनकी परीक्षा भी करना। **(क्रमशः)**

महाविद्यालय स्थल

सः विद्या या विमुक्तये

अनुशासन

अ उपसर्ग पूर्वक **शास्** धातु से **ल्युट** प्रत्यय पूर्वक बना ये शब्द अद्भुत है। अनु अर्थात् पीछे अथवा साथ में। शासन अर्थात् आज्ञा, उपदेश।

व्यक्ति जब अनुभव हीन होता है तो उसमें इतनी बुद्धि नहीं होती कि उसे जीवन में समय–समय पर क्या निर्णय लेना है, कठिन रास्तों से कैसे गुजरना है। ऐसे में किसी के शासन के पीछे–पीछे चलने से वह कठिन से कठिन रास्तों को भी पार कर जाता है। मैं समझता हूँ हर व्यक्ति अपने से बड़े और गुरुओं से अनुभव हीन ही होता है, अतः अनुशासन की आवश्यकता सभी को है।

अक्सर कुछ बाल बुद्धियों को लगता है कि यह अनुशासन परतंत्रता का नाम है; परन्तु मैं कहना चाहता हूँ कि अनुशासन के बिना सफलता और स्वाधीनता संभव नहीं है। अनुशासन के बिना व्यक्ति का सफल होना असम्भव है। देश का प्रधानमंत्री भी देश के राष्ट्रपति से अनुशासित है। देश का राष्ट्रपति भी देश के कानून से अनुशासित है, तभी यह देश सफलता की ऊँचाइयों को छू रहा है। आज आप देखेंगे कि हर वो व्यक्ति ऊँचाइयों को छू रहा है, जो किसी न किसी के अनुशासन में है। अनुशासित व्यक्ति ही जीवन में सफलता को प्राप्त कर सकता है। बिना अनुशासन के उपलब्धि हासिल नहीं होती। ध्वनि को अनुशासित करने से राग बन जाती है, शब्दों को अनुशासित करने से कविता बन जाती है, ईंटों को अनुशासित कर देने से इमारत बन जाती है, जल के प्रवाह को अनुशासित करने से नदी बन जाती है, अपने ज्ञान को तर्क–युक्ति, अनुमान प्रमाण से अनुशासित कर लेने वाला प्रमाणिक विद्वान बन जाता है, वाणी को अनुशासित कर लेने वाला ही श्रेष्ठ वक्ता बन जाता है और समस्त जीवन को अनुशासित कर देने से जीवन सफल बन जाता है; अत: अनुशासन ही जीवन का सौंदर्य है। अनुशासन का काम है बिखरे हुए को मिला देना, टूटे हुए को जोड़ देना, उलझे हुए को सुलझा देना और जब व्यक्ति एक आदर्श शासन को अपना बना लेता है और अपने उत्साह और आनंद से उसके पीछे चलता है तो वह व्यक्ति आत्मानुशासित कहलाता है। यह आत्मानुशासन अद्भुत है अत्यंत आनंदप्रदायी है, आत्मविश्वास वर्धक, स्वांत: सुखाय है, इसमें कुछ दिखावट नहीं है, न किसी से है न किसी के लिए है और जिस दिन वह अनुशासन आत्मानुशासन बन जाता है तो सफलता की गति चार गुना हो जाती है।

मैं कहना चाहता हूँ अनुशासित लोगों से कि यदि आपको तेजी से ऊँचाइयों को छूना है, तो आपको आत्मानुशासित हो जाना होगा, आज तक जो उत्कृष्टतम पदों को प्राप्त हुआ है, वह आत्मानुशासन से ही हुआ है। माता–पिता का अनुशासन तभी काम आएगा जब तक आप घर में है, गुरु का अनुशासन तभी तक काम आएगा जब तक आप विद्यालय में हैं; लेकिन आत्मा और मैं तादात्म्य हैं, वह नित्य हमें ऊँचाइयों के मार्ग पर ले जाएगा; इसलिए पहले हमें अननुशासन से अनुशासन की ओर फिर आत्मानुशासन की ओर बढ़ना होगा। अधिक क्या कहा जाए, आत्मानुशासित ही भगवान बन सकता है।

– संदेश जैन, दिल्ली (तृतीय वर्ष)

देव-शास्त्र-गुरु

(छंद – वीर)

मैं तो अनादि से भटक रहा, अगृहीत नशा सेवन करके।
भूल निजातम और सुगुरु को, मिथ्यादेवों को भज करके।।
धारै हैं इक ने अस्त्र–शस्त्र, पर मोह शत्रु न हरा सका।
जो दे उपदेश भव–तिरने का, वो खुद न भव को मिटा सका।।

उन वीतराग की वाणी ही, माँ जिनवाणी कहलाती है।
हिंसा का जिसमें अंश नहीं, सत्मार्ग सदा दिखलाती है।।
हे! ज्ञान ध्यान में रक्त गुरु, उपदेश तुम्हारा सुन करके,
मैं भी सुख अनंत पाऊँ, अपने आतम को ध्या करके।।

अब चाहत हो हित आतम को, और मुक्ति वधु को वरने को।।
अरहन्तादिक का उपदेश सुनो, अपने आतम में रमने को।।
जो वीतराग सर्वज्ञ हितंकर, इन गुण से लवलीन हुए।
छोड़ जगत संबंधों को, स्वाधीन हुये स्वाधीन हुये।।

– कपिल जैन, बम्होरी (शास्त्री द्वितीय वर्ष)

आगामी कार्यक्रम – भगवान महावीर के निर्वाण महोत्सव के पूर्व दिनांक 18 अक्टूबर 2022 को **वीर निर्वाण महोत्सव** विषय पर विशेष गोष्ठी का आयोजित किया जाएगा।

जैन शास्त्र, भक्ति गीत, तीर्थ दर्शन व पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो – वीडियो, प्रवचन साहित्य व अनेक जानकारियों के लिये vitragvani app Download करें या Visit करें – www.vitragvani.com
विविध चित्रों के लिए Visit करें – www.gurukahanartmusuem.org
Daily updates :- vitragvani vitragvani Telegram
संपर्क सूत्र – श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

पृष्ट 1 का शेष ...) मुख्य अतिथि श्री महेन्द्रकुमारजी गंगवाल जयपुर रहे। ऑनलाइन माध्यम से श्री बसंतभाई दोशी मुम्बई एवं श्री महिपालजी बाँसवाड़ा सम्मिलित हुए। मंचासीन सभी अतिथियों व विद्वानों का स्वागत डॉ. शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल एवं पण्डित पीयूषजी शास्त्री ने किया। उद्घाटन समारोह का संचालन पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने किया।

अन्य शिविरों से पृथक पद्धति वाले इस शिविर में प्रतिदिन लगभग 13 घंटे तत्त्वज्ञान का लाभ मिला, जिसमें प्रतिदिन 5 प्रवचन व 24 कक्षाओं के माध्यम से जैनदर्शन के सैद्धांतिक व आध्यात्मिक विषयों का गहन अध्ययन कराया गया। अंत में सभी विषयों की परीक्षा आयोजित कर विभिन्न कक्षाओं में विशेष स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को पुरस्कृत कर प्रमाण पत्र दिए गए।

शिविर में प्रवचनों की शृंखला

प्रात: पण्डित कमलचन्दजी पिड़ावा के शुद्धात्मशतक पर व्याख्यान, तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के अरिहंत चैनल के माध्यम से प्रवचनसार ग्रन्थ पर प्रवचन का प्रसारण एवं आध्यात्मिकसत्पुरूष श्रीकानजीस्वामी के इष्टोपदेश ग्रन्थ के आधार पर सी. डी. प्रवचनों का प्रसारण किया गया। तत्पश्चात् अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त विद्वान डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल द्वारा विशेषरूप से मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला।

रात्रिकालीन दो प्रवचनों में मुख्य प्रवचन पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली का क्रिया–परिणाम–अभिप्राय एवं सम्यक्चारित्र का अन्यथा स्वरूप विषय पर सम्पन्न हुआ, इसके पूर्व प्रतिदिन क्रमश: समागत विशिष्ट विद्वानों में डॉ. वीरसागरजी शास्त्री दिल्ली, डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर, डॉ. शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर, डॉ. मनीषजी शास्त्री मेरठ, डॉ. प्रवीणजी शास्त्री बाँसवाड़ा एवं डॉ. दीपकजी शास्त्री जयपुर के प्रवचन हुए।

डॉ. भारिल्ल द्वारा विशेष प्रवचन

इस शिविर में अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त विद्वान डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के **क्रमनियमित पर्याय एवं समाधि का सार** पर विशेष व्याख्यान हुए। डॉ. भारिल्ल ने अत्यन्त अस्वस्थ अवस्था में जहाँ चलता–बैठना भी मुश्किल है वहीं गद्दी पर बैठकर 1–1 घंटे अनवरतरूप से जिनागम के महत्त्वपूर्ण सिद्धान्तों का बहुत ही सरल, सुबोध व सहज प्रतिपादन किया। साथ ही उनका प्रायोगिकरूप क्या होता है वह भी उनके जीवन में प्रत्यक्ष महसूस किया गया। वे कहते हैं कि मैं समाधि में हूँ और समाधि मरण नहीं, जीवन है। आनन्द का नाम समाधि है और ऐसी समाधि में अपना प्रतिपल व्यतीत कर रहा हूँ।

शिविर की प्रमुख कक्षायें

शिविर में विविध विद्वानों द्वारा जिनागम के महत्त्वपूर्ण विषयों पर विभिन्न कक्षायें चलीं। जो निम्न प्रकार हैं –

पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली की प्रवचनसार सुखाधिकार।
डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर की समयसार एवं परमानन्दस्तोत्र।
डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर की द्रव्यसंग्रह एवं प्रमेयरत्नमाला।
डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर की नयचक्र एवं कालचक्र।
डॉ. दीपकजी शास्त्री वैद्य की 11 प्रतिमाएँ एवं सामान्य श्रावकाचार।
डॉ. अरुणजी बण्ड जयपुर की ध्यान का स्वरूप।
डॉ. मनीषजी शास्त्री मेरठ की श्रुत–परम्परा एवं तत्त्वार्थसूत्र।
पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर की उपदेश का स्वरूप व न्यायदीपिका।
पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री की महावीराष्टक/मंगलाष्टक व देव, शास्त्र, गुरू
डॉ. प्रवीणजी शास्त्री बाँसवाड़ा की तत्त्वार्थसूत्र एवं 14 गुणस्थान।
पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री जयपुर की छहढाला व अणुव्रताधिकार।
पण्डित संयमजी शास्त्री नागपुर की परीक्षामुख एवं सर्वज्ञ–सिद्धि।
पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री जयपुर की पूजन विधि स्वरूप एवं फल।
पण्डित अमनजी शास्त्री लोनी की चार अभाव।

शिविर के प्रमुख सारथी

श्रीमती आरती–अशोककुमारजी पाटनी परिवार सिंगापुर, श्रीमती कुसुम–प्रदीपजी सुपुत्र तिलकजी–अरिहंतजी चौधरी परिवार किशनगढ़, श्रीमती रेखा संजयकुमारजी, सुपुत्र तीर्थेश, सुपुत्री मोक्षा दीवान परिवार सूरत, श्रीमती कुसुम महेन्द्रकुमारजी सुपुत्र राहुलजी–विनीतजी गंगवाल परिवार जयपुर, श्रीमती आशा–अशोककुमारजी बड़जात्या परिवार इन्दौर, श्रीमती सुनीता–प्रेमचन्दजी सुपुत्र तन्मयजी–ध्याताजी बजाज परिवार कोटा, श्री निशीकान्तजी जैन परिवार औरंगाबाद, श्रीमती सुशीला–अजितप्रसादजी जैन सुपुत्र वैभवजी जैन परिवार दिल्ली, श्री प्रमोदजी एवं अरुणजी मोदी परिवार मकरोनिया सागर, श्री गौरवजी जैन सुपुत्र श्री परितोषवर्धनजी जैन परिवार जनता कॉलोनी जयपुर, श्रीमती मैनादेवी ध.प. स्व. पूनमचन्दजी सेठी सुपुत्र अनिलजी–सुभाषजी सुशीलजी सेठी परिवार दिल्ली, श्री माणकचन्दजी जैन एडपैन वाले मुम्बई, श्री कान्तिभाई मोटानी, विपुलभाई मोटानी परिवार मुम्बई, श्री नितिनभाई सी. शाह परिवार मुम्बई, श्री रमेशभाई मंगलजी मेहता हस्ते श्री निलेशभाई मेहता परिवार मुम्बई, श्री अवनीशजी मोदी परिवार मुम्बई, सावित्रीजी जैन दमोह एवं श्रीमती सुधा ध.प. प्रदीपजी गोधा जयपुर थे।

पुरस्कार वितरण एवं समापन समारोह

9 अक्टूबर 2022 को पुरस्कार वितरण एवं समापन समारोह आयोजित हुआ, जिसमें तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल की अध्यक्षता प्राप्त हुई एवं शिविर में पधारे सभी विद्वानों की उपस्थिति थी। पुरस्कार वितरणकर्ता श्री प्रेमचंदजी जैन एडवोकेट दौसा, श्री गौरवजी परितोषवर्धनजी जैन जयपुर एवं श्रीमती प्रभा-अजितकुमारजी जैन जौहरी बाजार जयपुर थे।

ट्रस्ट के कार्यकारी महामंत्री श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल द्वारा शिविर में पधारे सभी विद्वानों एवं अतिथियों का तहेदिल से आभार व्यक्त किया गया। पण्डित पीयूषजी शास्त्री ने सभी कार्यकर्ताओं एवं व्यवस्थापकों का आभार व्यक्त किया।

विद्वत्वर्ग में डॉ. राकेशजी शास्त्री, डॉ. शांतिकुमारजी पाटील, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा एवं डॉ. मनीषजी शास्त्री का उद्बोधन प्राप्त हुआ।

शिविर में आयोजित 24 विषयों की परीक्षाएँ ली गईं, जिसमें शास्त्री महाविद्यालयों के कुल 248 विद्यार्थियों ने 6-6 परीक्षाएँ दीं; इसप्रकार लगभग 1488 उत्तर पुस्तिकाएँ जॉच कर 5 घंटे की अल्पावधि में रिजल्ट तैयार किया गया।

विशिष्ट स्थान प्राप्त करने वाले छात्र निम्नानुसार हैं :

उपाध्याय कनिष्ठ में आर्जव जैन सिवनी, जिनय संघवी इन्दौर, कुशाग्र जैन सगवाड़। **उपाध्याय वरिष्ठ में** अरिहंत जैन बण्डा, आयुष जैन उदयपुर, आर्जव जैन खड़ैरी, अचल जैन उज्जैन, आराध्य जैन आरोन, महावीर देशमाने। **शास्त्री प्रथम वर्ष में जयपुर से** हर्ष जैन फुटेरा, अंकित जैन कुटोरा, चेतन जैन रहली, निश्चल जैन दिल्ली, मुदित जैन झालरापाटन, प्रिंस जैन बम्होरी। **शास्त्री द्वितीय तृतीय वर्ष में** संदेश जैन दिल्ली, मोहित जैन फुटेरा, आदित्य जैन फुटेरा, समर्थ जैन हरदा, अतिशय जैन भिण्ड, राजाराम लोधी गनयारी, तन्मय जैन सिंगोली ने प्रथम द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त किए। समारोह में विद्यार्थियों को पुरस्कार राशि व प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया।

पूजन एवं भक्ति का समस्त आयोजन पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री, पण्डित रिमांशुजी शास्त्री, पण्डित समकितजी शास्त्री एवं पण्डित दिव्यांशजी शास्त्री द्वारा किया गया। कार्यक्रमों का संचालन पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री जयपुर ने किया। शिविर के संयोजन में पण्डित सर्वज्ञजी भारिल्ल जयपुर, पण्डित रूपेन्द्रजी शास्त्री छिन्दवाड़ा, पण्डित गौरवजी शास्त्री जयपुर एवं पण्डित आकाशजी शास्त्री अमायन की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही।

प्रश्नोत्तरमाला

21

समयसार अनुशीलन के आधार से

– डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया

(गतांक से आगे...)

गाथा : 23-24

प्रश्न : पुद्गल को आत्मा और आत्मा को पुद्गल क्यों नहीं माना जा सकता? उदाहरण देकर समझाइए।

उत्तर : पुद्गल अचेतन है आत्मा चेतन है। जिसप्रकार प्रकाश और अंधकार का एक साथ रहने में विरोध है। उसीप्रकार चेतन और अचेतन का एक साथ रहने में विरोध है अतः पुद्गल को आत्मा और आत्मा को पुद्गल नहीं माना जा सकता।

प्रश्न : व्रत, तप, दया, दान आदि के विकल्प जीव हैं या अजीव? और क्यों?

उत्तर : व्रत, तप, दया, दान आदि के विकल्प अजीव हैं जीव नहीं; क्योंकि यदि यह जीव हो तो जीव से भिन्न नहीं हो सकते; किन्तु यह तो भिन्न हो जाते हैं। दूसरी बात यह की दया, दानादि के रागादि परिणाम अन-उपयोग स्वरूप है। यह स्वयं को अथवा पर को नहीं जानते, इस कारण इन्हें जड़, अचेतन या पुद्गल भी कहा जाता है। अतः यह दोनों सर्वथा जुदे-जुदे हैं। किसी भी प्रकार से एक नहीं है।

प्रश्न : मरणतुल्य कष्ट सहकर भी करने योग्य कार्य क्या है?

उत्तर : पर से भिन्न अपने आत्मा को समझने का उग्र पुरुषार्थ मरणतुल्य कष्ट सहकर भी करने योग्य कार्य है।

प्रश्न : क्या आत्मा को समझने में मृत्यु हो सकती है, कष्ट हो सकता है? यदि नहीं, तो ऐसा क्यों कहा गया है?

उत्तर : नहीं, आत्मा को समझने में न कष्ट होता है, न मृत्यु हो सकती है; किन्तु आत्मज्ञान की महिमा और उपयोगिता बताने के लिए मृत्यु की कीमत की बात आचार्य देव ने की है।

प्रश्न : आत्मानुभूति सहजसाध्य है या यत्नसाध्य?

उत्तर : आत्मानुभूति सहजसाध्य भी है और यत्नसाध्य भी वस्तुतः सहजसाध्य और यत्नसाध्य पुरुषार्थ में कोई विरोध नहीं है; क्योंकि आत्मानुभव का पुरुषार्थ सहज ही होता है अथवा सहज होना ही आत्मानुभव का सम्यक् पुरूषार्थ है। जब हमारी दृष्टि में आत्मानुभव अत्यंत उपाधिपने स्थापित हो जाएगा तब अंतर में रुचि की तीव्रता से अंतरोन्मुखी पुरुषार्थ सहज ही स्फूर्ति होगा।

• महाकाव्य : भरत का अन्तर्द्वन्द्व •

–डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

पहला अध्याय

(रेखता)

सहज सारी दुनियाँ चलती सहज चलता है सब संसार।
अरे तुम रहो निराकुल शान्त नहीं है भव सागर का पार।।
अरे तुम कुछ विकल्प मत करो और हो जावो भव से पार।
सहजता को स्वीकारो बन्धु सहजता जीवन का आधार।।44।।

अरे तुम हो जावो निश्चिन्त और तुम अपने में जाओ।
स्वयं को जानो पहिचानो स्वयं में स्वयं समा जाओ।।
काय चेष्टा कुछ भी मत करो और कुछ भी मत बोलो बोल।
और कुछ भी न सोचो भाइ एक आतम में रमो अमोल।। 45।।

अरे है यही धर्म का मर्म प्रभु की दिव्यध्वनि का सार।
अरे भरपूर किया रसपान भरत ने प्रमुदित हुये अपार।।
हुये वे स्वयं स्वयं में लीन और सबकुछ भूले भरतेश।
देव के चरणों में झुक गये स्वयं को भूल गये अवधेश।। 46।।

स्वयं को भूल गये अवधेश जिनेश्वर की भक्ति में लीन।
जिनेश्वर की भक्ति में लीन स्वयं में स्वयं हुये तल्लीन।।
और सब भूल गये थे भरत एक आतम में ही थे लीन।
ऋषभ के चरणों में झुक गये पूर्णतः भक्ति में तल्लीन।। 47।।

झुके ही रहे झुके ही रहे न जाने कबतक भरत नरेश।
और जब उठे, उठे ही रहे शान्ति के सागर भरत नरेश।।
शान्ति के सागर भरत नरेश क्रान्ति के वाहक भरत नरेश।
एकदम अद्भुत ही लग रहे अरे मुख मण्डल के परदेश।।48।।

अरे रे जिनदर्शन के साथ भरत ने निजदर्शन भी किये।
भरत ने निजदर्शन भी किये और अपने में ही रम गये।।
अरे अपने में ही रम गये और अपने में ही जम गये।
जमे सो जमे, जमे ही रहे अरे वे ऐसे ही रह गये।।49।।

और चातक दृष्टि से सभी भरत की ओर देखने लगे।
भरत दीक्षा न ले लें अभी सभी मन्त्रीगण चिन्तित हुये।।
अरे आँखों–आँखों में सभी मनहु उनसे कुछ कहने लगे।
यद्यपि बोले कुछ भी नहीं किन्तु वे मन को पढ़ने लगे।। 50।।

भरत के मन को पढ़ने लगे और थिर तन को लखने लगे।
अरे वे क्या–क्या कर सकते सभी जन यही परखने लगे।।
श्री श्रीवृषभसेन लघुभ्राता दीक्षा ले गणधर बन गये।
भरत भी ऐसा कुछ न करें सभी जन यही सोचने लगे।। 51।।

देखकर उन्हें जगत के जीव चकित हो ऐसे ही रह गये।
देखते रहे देखते रहे और सब उन्हें देखते रहे।।
हो गये अरे एकदम मुग्ध न जाने कैसा जादू हुआ।
सभी को ऐसी शंका हुई भरत दीक्षा न ले लें अभी।। 52।।

किन्तु वे मन को पढ़ने लगे धैर्य भी उनका जाने लगा।
और वे होने लगे अधीर करें क्या? समझ नहीं आता।।
भरत ने दिया तभी आदेश चलो अब राजमहल की ओर।
पुत्र का जन्म हुआ है वहाँ, सभी उनके मुख से सुनते।। 53।।

सभी की आकुलता कम हुई सभी की चिन्ता भी कम हुई।
भरत हैं अभी एकदम सहज, सहज जनता भी होने लगी।।
और सब लगे लौटने सहज हृदय में प्रभु की भक्ति लिये।
भरत भी चले महल की ओर प्रभु का चिन्तन करते हुये।। 54।।

प्रभु का चिन्तन करते हुये, प्रभु ने जो–जो बातें कहीं।
उन्हीं का घोलन करते हुये उन्हीं का मंथन करते हुये।।
उन्हीं को धारण करते हुये और अवधारण करते हुये।
उन्हीं का मनन और स्मरण विविध विध चिन्तन करते हुये।।55

महल की ओर चले भरतेश और जनता भी चलने लगी।
सभी को अपने–अपने काम याद आने लगते हैं अभी।।
भरत को भी आई अब सुनो जगतजन! पुत्र जन्म की याद।
सोचने लगे भरत सम्राट अरे उसके उत्सव की बात।।56।।

(दोहा)

इसप्रकार भरतेश ने, जिनवर दर्शन आज।
पूरण भक्तिभाव से, की पूजन जिनराज।।57।।
दिव्यध्वनि के श्रवण का, लाभ लिया भरपूर।
सबको ही आया प्रभो! अति आनन्द अपूर्व।।58।।

सत्पथ फाउण्डेशन द्वारा चित्रकला प्रतियोगिता

चैतन्यधाम : आचार्यकल्प पण्डित टोडरमलजी की 300वीं जन्मजयंती पर सत्पथ फाउण्डेशन नागपुर द्वारा वैश्विक स्तर पर चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

24 सितंबर 2022 को सत्पथ प्रश्नमंच के ग्रांड फिनाले में जिसका परिणाम घोषित किया गया। इस प्रतियोगिता में लगभग 210 प्रतियोगियों ने हिस्सा लिया। इन सभी चित्रों को बारीकी से देखकर निर्णायक मण्डल में पण्डित श्रुतेशजी शास्त्री सातपुते, श्रीमती सुहानी-विनीतजी नागपुर, श्री प्रियदर्शनजी नागपुर, श्री विवेकजी टक्कामोरे एवं विदुषी प्रतीति मोदी ने प्रथम स्थान सुरेंद्रजी मेहता अहमदाबाद एवं वंदिनी सकारिया गाजियाबाद को, द्वितीय स्थान अजितजी सोनाज अकलूज, डॉ. निधिजी जैन प्रतापगढ़, वर्षाजी जैन मुंबई को तथा तृतीय स्थान प्रतिभाजी जोहरापुरकर नागपुर, श्रद्धाजी हितेश दोशी नातेपुते, मोनाजी विकल्प शहा बडूज को प्रदान किया।

इन प्रतियोगियों को पण्डित बाबूभाई मेहता, पण्डित शैलेषभाई शाह, ब्र. अभिनन्दकुमारजी शास्त्री, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, पण्डित संजयजी शास्त्री एवं पण्डित विपिनजी शास्त्री के द्वारा पुरस्कार प्रदान किए गए। कार्यक्रम का संचालन श्रुतेश सातपुते शास्त्री एवं रवींद्र महाजन शास्त्री ने किया।

विशेष सांत्वना पुरस्कार श्रुतिजी जैन ग्वालियर, कृतिकाजी देवड़िया नागपुर, साक्षीजी जैन, कल्पनाजी शाह मुंबई, देशनाजी शहा गांधीनगर, श्रीमती ममताजी गोदरे सागर तथा सांत्वना पुरस्कार लब्धिजी जैन, प्रमितिजी जैन, अमृताजी ठोलिया कन्नड, अनिलजी शेठ देवलाली, मितलजी गांधी अकलूज, साधनाजी फडे पंढरपुर, दीपाजी शाह निरा, श्री महेंद्रजी शाह अहमदाबाद, राखीजी जैन, ईशिताजी छिंदवाडा, श्रीमती कांताजी अशोकनगर, चन्द्रप्रभाजी ललितपुर एवं कृतिका जैन सिंगापुर को घोषित किए गए। विशेष सांत्वना एवं सांत्वना पुरस्कार प्रतियोगियों को सत्पथ द्वारा भेजे जाएँगे।

कर्नाटक में धर्म प्रभावना

अनगोल-बेलगांव : यहाँ ब्राह्मी महिला मण्डल अनगोल के तत्त्वावधान में दिनांक 8 व 9 अक्टूबर 2022 को द्वितीय सम्यक्त्व संस्कार शिविर का भव्य आयोजन किया गया। इस अवसर पर पण्डित मिथुनजी शास्त्री द्वारा तीनलोक, जम्बूद्वीप, नन्दीश्वरद्वीप, ध्यान, श्रावकाचार, कालचक्र आदि विषयों एवं पण्डित अनेकान्तजी शास्त्री द्वारा मनुष्यभव, जैनधर्म, क्रमबद्धपर्याय, कर्मसिद्धांत, मुनिधर्म आदि विषयों को सरलता से स्पष्ट किया गया। शिविर में लगभग 150 से अधिक लोगों से सम्मिलित होकर तत्त्वज्ञान का लाभ लिया।

वाह..ज़िंदगी द्वारा डॉ. गोधा को जैन रत्न

वाह..ज़िंदगी द्वारा देशभर से जैन समाज की कुछ चुनिन्दा हस्तियाँ जिन्होंने विविध क्षेत्रों में उल्लेखनीय कीर्तिमान हासिल किया है, उन्हें **जैन रत्न** से सुशोभित किया गया।

इसी क्रम में **अन्तर्राष्ट्रीय विद्वान डॉ. संजीवकुमारजी गोधा** को **जैन रत्न** से सम्मानित किया गया। जिनके जीवन व परिश्रम को 02 सितम्बर 2022 को टी.वी. पर आदिनाथ चैनल के माध्यम से पूरी दुनिया ने देखा। आप भी डॉ. संजीव गोधा के यूट्यूब चैनल पर उस वीडियो को **जैन रत्न** के नाम से देख सकते हैं।

वाह..ज़िंदगी के डायरेक्टर श्री ललितजी सरावगी ने बताया कि डॉ. गोधा जैन समाज की एक ऐसी शख्सियत हैं, जिन्होंने अपने सरल आध्यात्मिक प्रवचनों के माध्यम से हजारों/लाखों लोगों के जीवन को तत्त्वज्ञान से सींचकर अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पूरी दुनिया में जैनशासन का परचम फहराया है। आज जिन्हें यूट्यूब के माध्यम से लगभग 25 हजार लोग एवं पारस टी.वी. के माध्यम से लगभग 1 लाख लोग प्रतिदिन देखते-सुनते हैं। आपके द्वारा अभी तक लगभग 25-30 हजार प्रवचन किए जा चुके हैं।

ज्ञातव्य है कि जैनरत्न से पूर्व आपको अध्यात्मवेत्ता, अध्यात्म-चक्रवर्ती, उपाध्यायकल्प आदि अनेक उपाधियों से अलंकृत किया जा चुका है।

निःशुल्क निःशुल्क निःशुल्क

जिनवाणी माँ को रखने हम तैयार...हम तैयार

इस कलिकाल में माँ जिनवाणी ही एकमात्र शरणभूत है; अतः हम सबको अपने घर/मंदिर/स्वाध्याय भवनादि स्थानों में जिनवाणी को रखना चाहिए, जिससे समय-समय पर हम उसका लाभ ले सकें। इसीप्रकार के भाव **श्री सौरभजी डी मेहता हस्ते श्री धनपतजी मेहता** द्वारा (स्व. श्रीमती चांदजी डी मेहता की पुण्य स्मृति में) संजोए गए।

इस योजना के अन्तर्गत...

1) आप पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर द्वारा प्रकाशित सत्साहित्य मंगा सकते हैं।
2) एक स्थान पर तीन हजार तक का साहित्य मँगा सकते हैं।
3) पूजन विधान की पुस्तकें इसमें सम्मलित नहीं होंगी।
4) एक पुस्तक की पाँच प्रतियाँ ही मँगा सकते हैं।

साहित्य प्राप्ति हेतु सम्पर्क करें-

नन्दकिशोर पारीक - 7412078703

डॉ. भारिल्ल के काव्य की विशेषता है

– डॉ. वीरसागर जैन, दिल्ली

डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल के काव्य की दो प्रमुख विशेषताएँ हैं– एक आध्यात्मिकता और दूसरी सरलता। पहली को हम भावपक्ष से सम्बन्धित सर्व विशेषताओं का केन्द्रबिन्दु कह सकते हैं और दूसरी को कलापक्ष से सम्बन्धित सर्व विशेषताओं का केन्द्रबिन्दु।

वैसे तो डॉ. भारिल्ल के काव्य में भाव एवं कला दोनों ही पक्षों से सम्बन्धित अन्य भी अनेक विशेषताएँ दृष्टिगोचर होती हैं, किन्तु उनमें से जो सर्वाधिक रूप से उभरकर हमारे सामने आती हैं, वे उपर्युक्त दो ही हैं। डॉ. भारिल्ल का सम्पूर्ण काव्य-रथ आध्यात्मिकता और सरलता के दो पहियों पर ही दौड़ रहा है। उसमें ये दोनों विशेषताएँ तिल में तेल की भाँति सर्वत्र व्याप्त हैं। डॉ. भारिल्ल के काव्य का भावपक्ष आध्यात्मिक हैं और कलापक्ष सरल-सुबोध। आध्यात्मिकता डॉ. भारिल्ल के काव्य की आत्मा है और सरलता उसका शरीर।

यहाँ यदि गम्भीरता से ध्यान दिया जाए तो ज्ञात होगा कि उक्त दो विशेषताएँ केवल डॉ. भारिल्ल के काव्य की ही नहीं हैं; अपितु सम्पूर्ण जैन साहित्य की ही प्रमुख विशेषताएँ हैं। आचार्य कुन्दकुन्द, आचार्य पूज्यपाद, योगींदु देव आदि का साहित्य भी इसीप्रकार का है। इसे जैन साहित्य शास्त्र भी कहा जा सकता है।

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित

वीतराग-विज्ञान एवं जैन पथप्रदर्शक

पत्रिकाओं को Whatsapp या E-Mail के माध्यम से ऑनलाइन प्राप्त करने के लिए इस QR Code को स्कैन करें।

सम्पर्क करें – 7412078704

Veetraggyanjpp@gmail.com

प्रारम्भ प्रारम्भ प्रारम्भ

विश्व की अद्वितीय रचना ढाईद्वीप जिनायतन के...

पंचकल्याणक का रजिस्ट्रेशन करें

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट जयपुर के निर्देशन में श्री कुन्दकुन्द कहान दि. जैन शासन प्रभावना ट्रस्ट इंदौर द्वारा आध्यात्मिकसत्पुरूष श्रीकानजीस्वामी के प्रभावना योग में निर्मित तीर्थधाम ढाईद्वीप जिनायतन का

श्री आदिनाथ दिगम्बर जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव

दिनांक : 20 जनवरी से 26 जनवरी 2023 तक

सभी साधर्मियों को रजिस्ट्रेशन करना अनिवार्य है, इसके बिना आपका ID Card नहीं बनेगा और कार्यक्रम का लाभ नहीं ले पायेगें।

आवास की व्यवस्था भी पहले आओ पहले पाओ के आधार पर की जाएगी। फॉर्म के सभी प्रश्नों के जबाव सतर्कता से देवें।

रजिस्ट्रेश Online ही होगें

PLEASE SCAN

शीघ्र-अति-शीघ्र रजिस्ट्रेनश अवश्य करावें

रजिस्ट्रेशन अन्तिम तिथि 10 नवम्बर 2022

सम्पर्क

93437-00891

supportdhaidweep.com

संस्थापक सम्पादक :

अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंद भारिल्ल

सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा**
एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी.

सह-सम्पादक : **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**

प्रकाशक व मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन**द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें –

ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

फोन : (0141) 2705581, 2707458, 7412078704

E-Mail : veetragvigyanjpp@gmail.com

प्रकाशन तिथि : 13 अक्टूबर 2022

प्रति,